

श्री श्याम किरपा रस का कतरा भी चुका पाऊ

श्री श्याम किरपा रस का कतरा भी चुका पाऊ,
मुझमें वो बात नहीं मेरी औकात नहीं,

गर सारी धरती को कागज़ में बना डालू,
गर सात समंदर को स्याही में बना डालू,
फिर भी वर्णन कर दू दरबार की महिमा का
मुझमें वो बात नहीं मेरी औकात नहीं,

किस्मत के मारो को मिलता सत्कार नहीं,
बस श्याम के दर पे ही ऐसा व्यवहार नहीं,
उनके उपकारों को मर के भी चुका पाऊ
मुझमें वो बात नहीं मेरी औकात नहीं,

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/15710/title/shri-shyam-kirpa-ras-ka-katara-bhi-chuka-pao>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |